जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मई 2023 ।। अंक – 34 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

स्वरोजगार से आर्थिक स्वाबलंबन का खुला द्वार (पृष्ठ – 02)

सोनी के सपने को मिली नई उड़ान (पृष्ठ – 03)

सहरसा वूमेन जीविका प्रोड्यूसर कंपनी से किसानों को मिला बड़ा बाजार (पृष्ठ – 04)

जीविका दीदी की रसोई : आर्थिक सशक्तीकरण का सुलभ हुआ सफर

भागलपुर जिला मुख्यालय स्थित सदर अस्पताल में संचालित दीदी की रसोई से 8 जीविका दीदियाँ जुड़ी हैं। इन्हीं दीदियों में से एक हैं नूतन दीदी। भागलपुर के जगदीशपुर प्रखंड की रहने वाली नूतन कम आय के कारण काफी कठिनाई में जीवन जी रही थीं। पति के साथ मिलकर वह बिस्कुट बनाने और बेचने का काम करती थी। पति के बीमार हो जाने से उनका काम बंद हो गया। पति के इलाज में काफी पैसा खर्च हो रहा था। इससे नूतन दीदी के घर की माली हालत दिनों–दिन खराब होती चली गई। इसी चिंता के बीच नूतन को एक दिन नई उड़ान संकुल स्तरीय संघ अन्तर्गत दीदी की रसोई प्रारंभ होने की सूचना मिली। संकुल संघ के माध्यम से आवश्यक प्रक्रियाओं से गुजरने के उपरांत नूतन सदर अस्पताल, भागलपुर में शुरू होने वाली 'जीविका दीदी की रसोई' से जुड़ गई। इसके बाद उनके लिए आमदनी का एक स्थायी साधन उपलब्ध हो गया। दीदी की रसोई में काम करने के बदले प्राप्त होने वाली मासिक आय से उन्होंने अपने पति का इलाज कराया। अब उनके पति स्वस्थ हैं। दीदी की रसोई में काम करने के बदले वह प्रति माह 8,800 रुपये अर्जित कर रही हैं। इसके अलावा वह दीदी की रसोई में एक साझेदार भी हैं। इस गतिविधि से जुड़ने के बाद नूतन कुमारी आत्मनिर्भर बन गई हैं। उनके चेहरे पर अब आत्मविश्वास की झलक साफ दिखाई देती है। नूतन दीदी जैसी सैकड़ों जीविका दीदियाँ आज 'दीदी की रसोई' जैसी गतिविधि से जुड़कर आत्मनिर्भर बन रही हैं।

सरकारी अस्पतालों में संचालित 'जीविका दीदी की रसोई' की वजह से एक ओर जहां सरकारी अस्पतालों में भर्ती मरीजों, उनके परिजनों, अस्पताल कर्मियों एवं आम लोगों को शुद्ध, स्वादिष्ट, पौष्टिक एवं सस्ता खाना मिल रहा है, वहीं दूसरी तरफ जीविका दीदियों को स्थायी रोजगार का अवसर भी प्राप्त हुआ है। दीदी की रसोई से जुड़कर वे उद्यमशील और आत्मनिर्भर भी बन रही हैं। उनमें जोखिम लेने का साहस पैदा हुआ है और अब उनमें जीवन पथ पर आगे बढ़ने की उम्मीद एवं ललक दिखाई देने लगी हैं। दीदी की रसोई जैसे जिम्मेदारी एवं जोखिम भरे कार्यों को वे दिन–रात की मेहनत एवं पूरी लगन के साथ कर रही हैं। यही कारण है कि इन दीदियों के द्वारा दीदी की रसोई का संचालन बेहद सफलतापूर्वक एवं पारदर्शी तरीके से किया जा रहा है। दीदी की रसोई के सफल संचालन हेतु जीविका द्वारा इन दीदियों को प्रशिक्षित किया गया है। परिणामस्वरूप दीदी की रसोई में खाना पकाने, भोजन परोसने, अस्पतालों में मरीजों को भोजन की आपूर्ति करने, रसद सामग्रियों की उपलब्धता सुनिश्चित करने, परिसर की साफ–सफाई करने और कुशल आतिथ्य सत्कार से लेकर मानव संसाधन एवं वित्तीय प्रबंधन का दायित्व दीदियाँ स्वयं संभालती हैं। दीदियों की उद्यमशीलता, कार्यकुशलता एवं इनकी लगनशीलता की वजह से दीदी की रसोई ने सफलता की नई ऊंचाइयों को छुआ है। जीविका दीदियों द्वारा संचालित विभिन्न उद्यमों में से दीदी की रसोई को सफल उद्यम की श्रेणी में रखा गया है। यही कारण है कि दीदी की रसोई की सफलता की कहानी राज्य के बाहर दूसरे राज्यों में भी सुनाई दे रही है।

बिहार के माननीय मुख्यमंत्री की पहल पर शुरू की गई दीदी की रसोई ने अपनी सफलता में कई नए आयाम जोड़े हैं। यही कारण है कि अब सरकारी अस्पतालों के अतिरिक्त विभिन्न सरकारी कार्यालयों एवं अन्य परिसरों में भी 'जीविका दीदी की रसोई' की शुरुआत की जा रही है। वर्त्तमान में बिहार में कुल 97 जीविका दीदी की रसोई संचालित है। इसके अतिरिक्त अस्पताल परिसर की साफ–सफाई और अस्पताल में भर्ती मरीजों के वस्त्रों की आपूर्ति जैसे कार्यों की संभावना बढ़ी है। इससे निश्चित रूप से बड़ी संख्या में जीविका दीदियों के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

स्वरोजगार से आर्थिक स्वावलंबन का खुला द्वार

कटिहार जिले के हफलागंज के सरस्वती जीविका स्वयं सहायता समूह एवं एकता जीविका महिला ग्राम संगठन से जुडी स्वर्णलता स्वरोजगार के साथ आर्थिक स्वावलंबन की ओर कदम बढ़ा चुकी हैं। एक समय तंगहाली से गुजर रहे स्वर्णलता को उम्मीद की कोई किरण नहीं दिखाई दे रही थी। इसी बीच उन्हें समूह का सहारा मिला तो उसमें हिम्मत आ गयी। अपने व्यवसाय से स्वर्णलता ने न केवल अपने परिवार को गरीबी से उबारा बल्कि तरक्की के रास्ते पर भी ला दिया है।

सात साल पहले इनके बड़े बेटे की तबियत ख़राब हो गई। समूह से मिले ऋण से बच्चे का इलाज करवाया। इलाज के बाद बच्चा स्वस्थ हो गया। बच्चे के स्वस्थ हो जाने के उपरांत इनके मन में विचार आया कि क्यों न कोई स्वरोजगार किया जाए, ताकि इलाज में हुए खर्च की भरपाई हो पाए। काफी विचार–विमर्श के बाद जीविका की मदद से अगरबत्ती बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

अगरबत्ती निर्माण के लिए इन्होंने समूह से अबतक दो लाख रुपये ऋण लिया। इनके कार्य में इनका बेटा काफी मदद करता है। अगरबत्ती व्यवसाय में स्वर्णलता ने चार दीदियों को रोजगार भी उपलब्ध करवाया है। नजदीकी बाजार के साथ जिला एवं राज्य स्तर पर प्रदर्शनी लगाकर भी दीदी अगरबत्ती की बिक्री करती हैं। दीदी द्वारा प्रति वर्ष आठ से नौ लाख रूपये का कारोबार किया जाता है। इससे सालाना लगभग तीन लाख रुपए की आमदनी हो रही है। समूह से लिए ऋण को भी इन्होंने वापस कर दिया है। इनके साथ कार्य करने वाली समूह की अन्य दीदियों को भी तीन से चार हजार रुपए की आमदनी प्रतिमाह हो रही है।

ग्रामीण महिलाओं के लिए उद्यम का माध्यम बनी उर्मिला

रोहतास जिला के संझौली प्रखंड की उर्मिला देवी को अपने सपने पूरा करने के लिए संघर्ष का सामना करना पड़ा। इनके प्रयासों का परिणाम यह निकला कि आज हस्तशिल्प के क्षेत्र में उनकी अपनी अलग पहचान है। खुद को आर्थिक रूप से सशक्त करने के बाद उन्होंने स्थानीय महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भर भी बना दिया है। उर्मिला तथा इनके सहयोगी दीदियों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प उत्पाद की मांग बाजार में सालों भर है।

उर्मिला देवी की शादी वर्ष 1995 में संझौली के बिनोद कुमार से हुई थी। एक दिन घर में दिया से आग लग गयी, जिससे उनका शरीर जल गया। काफी इलाज के बाद उनका शरीर तो ठीक हो गया मगर इस दुर्घटना ने उर्मिला देवी के आत्मविश्वास को तोड़ दिया। वह जीवन से निराश हो गयी। समय के साथ उर्मिला देवी के घाव भरने लगे और वह अपने सपने को पूरा करने का प्रयास करने लगी। शादी के पहले सीखी गयी हस्तशिल्प कला को रोजगार का साधन बनाने का निर्णय लिया। पूंजी के अभाव के कारण इस कार्य को काफी छोटे स्तर पर शुरू किया। उर्मिला देवी वर्ष 2015 में जीविका समूह से जुड़ी और उसकी गतिविधियों में भाग लेने लगीं। समूह से जुड़ाव के बाद जहां उनके आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी हुई, वहीं उन्हें कम दर पर आसानी से कर्ज भी मिल गया।

आज उर्मिला देवी के साथ इस व्यवसाय में 20 से 25 महिलाएँ जुडी हुई हैं। उनके हस्तशिल्प में डागरा, थालीपरोस, तोरण, सेजकली, पेंटिंग बिस्तर, एप्लिक, झूमर, कंगना, सिंहोरा, सिलवट ढक्कन, दीवालदीप, दीवाल महावार, दंड छैगल, दुल्हन रुमाल, डेगदौरा, घरौंदा इत्यादि शामिल हैं। इस व्यवसाय से उर्मिला देवी को सालाना 3 से 4 लाख रूपये की आमदनी हो जाती है, वहीँ इनके साथ जुड़ी महिलाएँ भी सालाना 50 से 60 हजार रूपये कमा लेती हैं। उर्मिला देवी हस्तशिल्प निर्माण व्यवसाय के अलावा अपने क्षेत्र की ग्रामीण लड़कियों तथा महिलाओं को सिलाई, ब्यूटीशियन, पेंटिंग, एवं हस्तशिल्प कला सिखाती हैं और उन्हें आत्मनिर्भर होने के लिए प्रेरित करती हैं।

सोनी के सपने को मिली नई उड़ान

मुजफ्फरपुर जिले के मड़वन प्रखंड की सोनी देवी मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना की एक लाभार्थी हैं। बेला के बैग कलस्टर में 24 लोगों को रोजगार देकर सपने को साकार कर रही हैं। सोनी के पति विक्रम कुमार साह की कपड़े की एक छोटी सी दुकान थी। एक दिन पति दुर्घटना के शिकार हो गए, जिसकी वजह से उन्हें लकवा मार दिया। इस घटना के बाद सोनी देवी पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। इन्हीं कठिनाईयों एवं परेशानियों के बीच वर्ष 2016 में सोनी पूजा जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ी और उन्होंने पहला ऋण दस हजार रुपये लिया। जिससे छोटा सा श्रृंगार का दुकान खोला, पर वह दुकान चल नहीं पाया। जिसके बाद एक प्राइवेट कंपनी में कार्य भी करना शुरू किया। 6 महीने तक काम करने के बाद उन्होंने इसे छोड़ दिया। पुन: समूह से पचास हजार रूपये ऋण लिया। इस ऋण से उन्होंने अपने व्यवसाय को बड़ा किया।

समूह की बैठक में दीदी को बैग क्लस्टर के बारे में पता चला। सोनी इसके बारे में दीदियों से बात की। दीदियों ने उनका साहस बढ़ाया और उन्हें विश्वास दिलाया कि वह इस काम को बेहतर तरीके से कर सकती हैं। इसके बाद सोनी को तीन स्तर पर प्रशिक्षण मिला। बैग क्लस्टर की शुरुआत 4 दिसंबर 2022 को हुई। प्रोड्यूसर ग्रुप की अध्यक्ष सोनी देवी को बनाया गया। जिसके अंदर में 16 ऑपरेटर दीदी और 8 पुरुष ऑपरेटर शामिल हैं। आज सोनी दीदी अपने यूनिट को बेहतर तरीके से संचालित कर रही हैं। एक महीने में उनके यूनिट ने 1500 बैग बनाय। अब सोनी का ग्रुप 4000 बैग का निर्माण प्रतिमाह कर रहा है। प्रत्येक माह सोनी को 30 से 35 हजार की आमदनी हो रही हैं। सोनी देवी बताती हैं कि आज उनके साथ–साथ बाकी दीदियों की जिंदगी भी बेहतर हो गयी हैं। आज समाज में सोनी की एक नई पहचान है।

उद्यमशीलता से अरूणा बनी आर्थिक सशक्तीकरण की मिसाल

मधेपुरा जिला के कुमारखंड प्रखंड के रहटा ग्राम की अरूणा देवी एक समय विभिन्न समस्याओं का सामना कर रही थी। परिवार का भरण–पोषण, बेटी की शादी एवं बच्चों की पढ़ाई की चिन्ता उन्हें सदैव सताती रहती थी। इसका मुख्य कारण घर की कम आमदनी थी। इसी बीच अरूणा 2010 में किरण जीविका संकुल स्तरीय संघ एवं प्रकाश जीविका ग्राम संगठन के अन्तर्गत कन्हैया जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के साथ उन्होंने विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। समूह से लगभग 2 लाख का ऋण लेकर उन्होंने अपनी व्यवसायिक एवं पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति की। प्रारंभ में उन्होंने किराना के दुकान का संचालन प्रारंभ किया। उन्होंने दुकान की कमाई से स्पाईलर मिल की स्थापना की और सरसों तेल का उत्पादन शुरू किया। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक रूपांन्तरण परियोजना के अन्तर्गत व्यवसाय को बढ़ाने के लिए 2.5 लाख रूपये का ऋण दिया गया। जिसे वे अपने सरसों तेल के उत्पादन में निवेश की। वर्त्तमान में जीविका परिवार से जुड़े किसानों से सरसों का संग्रहण करती हैं और उसे अपने मिल में पिरोती हैं। इसके बाद अपने किराना दुकान के माध्यम से शुद्व सरसों का तेल ग्राहकों को उपलब्ध करवाती हैं। किसानों को भी सरसों के लिए उचित मूल्य देती हैं। अरूणा देवी वर्त्तमान समय में एक उद्यमी के रूप में रहटा गांव ही नहीं बल्कि पूरे प्रखंड में प्रसिद्ध हैं। जीविका से जुड़ाव के पश्चात उनकी परिवारिक स्थिति में भी बदलाव आया है। उन्होंने अपनी बेटी की शादी की एवं दो बेटा की पढ़ाई करवा रही हैं। अरूणा देवी के आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो गया है। उनकी मासिक आमदनी लगभग 50000 रूपये की है। उद्यमशीलता से उनके जीवन में बदलाव आया है। अरूणा अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। साथ हीं साथ अपने आस–पड़ोस में कर्मठता, उद्यमशीलता एवं दृढ़ता की मिसाल बनी हुई हैं।

सहरसा वूमेन जीविका प्रोड्यूसर कंपनी से किसानों को मिला बड़ा बाजार

जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े अधिकांश ग्रामीण परिवारों की रोजगार का मुख्य साधन कृषि और इससे सम्बद्ध गतिविधियाँ है। कृषि उत्पादों को उचित मूल्य दिलाने तथा कृषि कार्य में संलग्न परिवारों की आय में बढ़ोतरी करने के लिए जीविका द्वारा अनेक प्रकार के प्रयास किये जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों में से एक है– कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्द्धन। इसी उद्देश्य से सहरसा जिला में दिनांक 13.06.2018 को सहरसा वूमेन जीविका प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की स्थापना की गई थी। कंपनी को किसान उत्पादक कंपनी (फामर्स प्रोड्यूसर कंपनी–एफ.पी.सी.) के रूप में पंजीकृत किया गया है। जीविका समूह से जुड़ीं 1061 महिला किसान कंपनी की सदस्य हैं। कंपनी कृषि और बागवानी उत्पादों के व्यापार, प्रसंस्करण और विपणन का कार्य करती है। कंपनी के द्वारा जीविका समूह से जुड़े महिला किसानों के कृषि उत्पादों के विपणन का कार्य किया जा रहा है। कंपनी मक्का की खरीद–बिक्री का कार्य करती है। इसके अलावा गेहूं, मखाना आदि अन्य कृषि उत्पादों का विपणन भी शुरू कर दिया गया है। इससे समूह से जुड़े छोटे और सीमांत किसानों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को उचित कीमत मिलती है। साथ ही साथ कंपनियों के मुनाफे का भी अंश उन्हें प्राप्त होता है।

कंपनी के संचालन एवं बेहतर प्रबंधन हेतु 5 सदस्यीय निदेशक मंडल का गठन किया गया है। कंपनी का मुख्यालय सहरसा के सोनवर्षा में है और जिले के प्रमुख मक्का उत्पादक प्रखंडों– पतरघट, सौर बाजार और सोनवर्षा में महिला किसानों के साथ यह काम कर रही है। इन प्रखंडों के मक्का किसानों द्वारा उत्पादित मक्के की खरीद कंपनी के द्वारा की जाती है। इसके बाद इन्हें विभिन्न बाजारों में बेचा जाता है जिससे किसानों को मक्का की अच्छी कीमत मिल जाती है। साथ ही कृषि उत्पादों के विपणन से कंपनी को होने वाले मुनाफे का अंश भी किसानों को प्राप्त होता है।

कंपनी की स्थापना का उद्देश्य–

- कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्द्धन करते हुए छोटे और सीमांत किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार करना ताकि सदस्यों को कृषि उत्पादों का उचित मूल्य मिल सके।
- खेती की लागत में कमी और उत्पादकता में बढ़ोतरी करने का प्रयास करना।
- बीज, उर्वरक कृषि रसायन, कृषि उपकरण और औजार जैसी उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- सदस्यों को बचत, ऋण और बीमा आदि जैसी वित्तीय सेवाओं तक पहुँच बनाने में सुविधा और सक्षम बनाना।
- एक प्रभावी और कुशल विपणन प्रणाली, प्रसंस्करण और निर्यात के माध्यम से सदस्य किसानों को उनकी उपज की उचित मूल्य प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करना।
- कृषि, व्यवसाय और उद्योग के साथ गतिशील कार्यात्मक संबंधों को विकसित करके शेयर धारकों की आय में वृद्धि करना और इससे जुड़े किसानों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य दिलाना।

उपरोक्त उद्देश्यों से गठित की गई किसान उत्पादक कंपनी 'सहरसा वूमेन जीविका प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' ने अपने इन उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में सार्थक प्रयास कर रही है। कंपनी के द्वारा बड़े पैमाने पर मक्के की खरीद की जा रही है। इससे किसानों को अच्छी आमदनी हुई है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार